GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं मूल्य आधारित शिक्षा : भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. सुनीता गीते[1]

सहायक प्राध्यापिका, *श्री उमिया कन्या महाविद्यालय, रंगवासा, राऊ,इंदौर,मध्य प्रदेश*

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन लाने वाली एक महत्वपूर्ण एवं दूरदर्शी नीति है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, व्यवहारिक, कौशल आधारित, रोजगारोन्मुख तथा मूल्यपरक बनाना है। यह नीति विद्यार्थियों को केवल पुस्तक आधारित एवं परीक्षा केन्द्रित ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उनमें नैतिक मूल्यों, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता, आत्मनिर्भरता तथा व्यवहारिक दक्षताओं के विकास पर विशेष बल देती है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक प्राप्त करना या रोजगार हासिल करना नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना भी आवश्यक हो गया है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व, उसकी आवश्यकता, भारतीय ज्ञान परंपरा से उसके संबंध तथा शिक्षण प्रक्रिया में उसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

नई शिक्षा नीति में शिक्षा को विद्यार्थी केन्द्रित, अनुभवात्मक, गतिविधि आधारित तथा बहुआयामी बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस नीति में रटने की प्रवृत्ति को कम करके सीखने की प्रक्रिया को अधिक रुचिकर, सहभागितापूर्ण एवं जीवनोपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। इसके अंतर्गत प्रोजेक्ट विधि, कहानी विधि, खेल विधि, भ्रमण विधि, प्रदर्शन विधि, सक्रिय अधिगम, समूह शिक्षण तथा डिजिटल शिक्षण जैसी आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। ये शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों में सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता, नैतिकता, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय संवेदनाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन विधियों के माध्यम से विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही प्राप्त नहीं करते, बल्कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों को समझने और समस्याओं का समाधान खोजने में भी सक्षम बनते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास करती है। भारतीय शिक्षा परंपरा में सदैव सत्य, अहिंसा, सेवा, सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे जीवन मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को केवल बौद्धिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। नई शिक्षा नीति उसी परंपरा को आधुनिक संदर्भों में पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है। नीति में मातृभाषा आधारित शिक्षण, स्थानीय ज्ञान, भारतीय संस्कृति, कला एवं परंपराओं के संरक्षण

पर भी बल दिया गया है, जिससे विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति एवं परंपरा के प्रति सम्मान की भावना विकसित हो सके।

इस नीति में शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का मार्गदर्शक, प्रेरक, सलाहकार एवं चरित्र निर्माणकर्ता भी है। नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षक को आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग करके विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक चेतना तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए। शिक्षक का व्यवहार, व्यक्तित्व एवं शिक्षण शैली विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर गहरा प्रभाव डालती है। इसलिए शिक्षकों के प्रशिक्षण, गुणवत्ता सुधार तथा व्यावसायिक विकास पर भी विशेष बल दिया गया है।

वर्तमान समय में समाज में बढ़ती हिंसा, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, सामाजिक विघटन तथा मानवीय संवेदनाओं में कमी जैसी समस्याएँ गंभीर चिंता का विषय हैं। ऐसी परिस्थितियों में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को सही और गलत के बीच अंतर समझने की क्षमता प्रदान करती है तथा उनमें जिम्मेदारी, संवेदनशीलता, सहानुभूति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को केवल सफल व्यक्ति ही नहीं, बल्कि एक आदर्श नागरिक एवं बेहतर मानव बनने के लिए प्रेरित करती है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को जीवनोपयोगी, नैतिक, संस्कारयुक्त एवं रोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल एवं मूल्यों के संतुलित विकास पर बल देती है। शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के प्रभावी प्रयोग द्वारा मूल्य आधारित शिक्षा को अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनाया जा सकता है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में ऐसी शिक्षण व्यवस्था विकसित की जाए, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक विकास को भी सुनिश्चित कर सके, ताकि वे राष्ट्र निर्माण में सक्रिय एवं सकारात्मक भूमिका निभा सकें।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मूल्य आधारित शिक्षा, नैतिक मूल्य, भारतीय ज्ञान परंपरा, कौशल विकास।

प्रस्तावना

भारत की शिक्षा परंपरा प्राचीन काल से ही ज्ञान, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित रही है। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थियों को केवल शैक्षिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी शिक्षा, अनुशासन, सेवा, सहयोग तथा नैतिकता की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसे समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाना था।

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक एवं रोजगार केन्द्रित हो गया है। भौतिकवाद, तकनीकी विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, असहिष्णुता, तनाव तथा सामाजिक संवेदनशीलता की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा को केवल सूचना एवं ज्ञान तक सीमित न रखकर मूल्य आधारित बनाना समय की आवश्यकता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई। यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी, कौशल आधारित, व्यवहारिक एवं मूल्यपरक बनाने का प्रयास करती है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता तथा नैतिक मूल्यों के विकास पर बल देती है।

चित्र 1 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संकल्पनात्मक दृश्य

अनुसंधान के उद्देश्य

- इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधानों का अध्ययन करना।
- मूल्य आधारित शिक्षा की अवधारणा एवं महत्व का विश्लेषण करना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मूल्य शिक्षा के संबंध को समझना।
- शिक्षा नीति में मूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
- विभिन्न शिक्षण विधियों के माध्यम से मूल्यों के विकास का अध्ययन करना।
- शिक्षक की भूमिका का मूल्य शिक्षा में महत्व स्पष्ट करना।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

डेटा स्रोत

इस अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है। यह शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जैसे—

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दस्तावेज
- पुस्तकें एवं शोध पत्र
- शैक्षिक रिपोर्ट
- ऑनलाइन अकादमिक स्रोत

डेटा विश्लेषण

डेटा का विश्लेषण सामग्री विश्लेषण विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

यह अध्ययन सैद्धांतिक प्रकृति का होने के कारण किसी प्रतिदर्श का चयन नहीं किया गया है।
यदि इसे सर्वे आधारित बनाया जाए तो संभावित रूप से—
जनसंख्या : उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी एवं शिक्षक
प्रतिदर्श : 100 विद्यार्थी एवं 20 शिक्षक
प्रतिचयन विधि : सरल यादृच्छिक प्रतिचयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार लाने वाली एक ऐतिहासिक एवं दूरदर्शी नीति है। इसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को लागू किया गया। लगभग 34 वर्षों के बाद नई शिक्षा नीति लागू की गई, जिसने शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य एवं शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत किए। यह नीति 21वीं सदी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, व्यवहारिक, कौशल आधारित एवं मूल्यपरक बनाना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। यह नीति केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता, नैतिकता, नवाचार तथा व्यावहारिक कौशल के विकास पर विशेष बल देती है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास करती है, ताकि वे बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को विकसित कर सकें।

नई शिक्षा नीति में मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा में शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है। नीति के अनुसार कम से कम कक्षा पाँच तक तथा संभव हो तो कक्षा आठ तक विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। इससे विद्यार्थियों में विषय की बेहतर समझ विकसित होगी तथा उनकी रचनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी।

नई शिक्षा नीति में डिजिटल शिक्षा एवं तकनीकी नवाचार पर विशेष बल दिया गया है। वर्तमान समय में तकनीकी विकास शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। इसलिए नीति में ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल संसाधनों, वर्चुअल प्रयोगशालाओं तथा तकनीकी आधारित शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देने की बात कही गई है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा के महत्व को विशेष रूप से अनुभव किया गया, जिसके कारण शिक्षा में तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है।

यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ने पर भी बल देती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता तथा राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित करना भी है। नीति में भारतीय भाषाओं,

कला, संस्कृति, योग, पर्यावरण संरक्षण एवं जीवन मूल्यों को पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण भाग बनाया गया है।

इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, समावेशी, कौशल आधारित एवं मूल्यपरक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ

- शिक्षा को कौशल आधारित एवं व्यवहारिक बनाना।
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देना।
- मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन देना।
- रटने की प्रवृत्ति को कम करके अनुभवात्मक अधिगम पर बल देना।
- तकनीकी एवं डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना।
- नैतिक एवं मूल्य आधारित शिक्षा को महत्व देना।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण एवं गुणवत्ता सुधार पर बल देना।
- विद्यार्थियों में रचनात्मकता एवं नवाचार का विकास करना।

मूल्य आधारित शिक्षा का अर्थ एवं अवधारणा

मूल्य आधारित शिक्षा वह शिक्षा है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास किया जाता है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता, ईमानदारी तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों से युक्त बनाती है।

मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित करना है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को समाज के प्रति जागरूक एवं उत्तरदायी नागरिक बनाने में सहायक होती है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृति में मूल्य शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। "सत्यं वद, धर्मं चर" तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे आदर्श भारतीय ज्ञान परंपरा में मानवीय मूल्यों की महत्ता को स्पष्ट करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य आधारित शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य आधारित शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। यह नीति केवल विद्यार्थियों को शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक विकास पर भी विशेष बल देती है। वर्तमान समय में समाज में बढ़ती हिंसा, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, स्वार्थपरता तथा सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ गंभीर चिंता का विषय बनती जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा को केवल परीक्षा एवं अंक प्राप्ति का माध्यम न मानकर मानव मूल्यों के विकास का साधन बनाना आवश्यक हो गया है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य आधारित शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण आधार बनाया गया है।

नई शिक्षा नीति का मानना है कि यदि विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास किया जाए, तो वे भविष्य में समाज एवं राष्ट्र के विकास में सकारात्मक योगदान दे सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को विद्यार्थी केन्द्रित, अनुभवात्मक तथा गतिविधि आधारित बनाने पर बल दिया गया है। इसके अंतर्गत रटने की प्रवृत्ति को कम करके समझ आधारित अधिगम को बढ़ावा दिया गया है। नीति में प्रोजेक्ट विधि, खेल विधि, कहानी विधि, भ्रमण विधि, सक्रिय अधिगम, समूह

शिक्षण तथा डिजिटल शिक्षण जैसी आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इन शिक्षण विधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन, सहिष्णुता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक सहभागिता जैसे मूल्यों का विकास होता है।

नई शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों को भी शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। भारतीय संस्कृति में सदैव नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं मानवता को विशेष महत्व दिया गया है। "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वे भवन्तु सुखिनः" तथा "सत्यं वद, धर्मं चर" जैसे सिद्धांत भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं। नई शिक्षा नीति इन मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करके विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना चाहती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की भूमिका को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का मार्गदर्शक, प्रेरक एवं चरित्र निर्माणकर्ता भी है। शिक्षक का व्यवहार, व्यक्तित्व तथा शिक्षण शैली विद्यार्थियों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। इसलिए नीति में शिक्षकों के प्रशिक्षण, गुणवत्ता सुधार तथा नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों पर विशेष बल दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, वैश्विक नागरिकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विद्यार्थियों को प्रकृति, समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाने का प्रयास किया गया है।

इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्य आधारित शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण आधार माना गया है। यह नीति विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावनात्मक विकास पर भी बल देती है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य ऐसे जिम्मेदार, संवेदनशील, नैतिक एवं आत्मनिर्भर नागरिक तैयार करना है, जो राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें। अतः मूल्य आधारित शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार है।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मूल्य शिक्षा

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध परंपराओं में से एक है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता तथा अन्य भारतीय ग्रंथों में जीवन मूल्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से विद्यार्थियों को नैतिकता, अनुशासन, सेवा तथा सहयोग की शिक्षा दी जाती थी।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों का जीवन प्रकृति के निकट होता था। वहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास भी था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है। यह नीति भारतीय संस्कृति, भाषाओं, कला एवं नैतिक मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ने पर बल देती है।

शिक्षण विधियाँ एवं तकनीकों की भूमिका

नई शिक्षा नीति में शिक्षण को छात्र-केंद्रित एवं गतिविधि आधारित बनाने पर बल दिया गया है। विभिन्न शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, रचनात्मकता तथा सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है।

1. प्रोजेक्ट विधि

प्रोजेक्ट विधि में विद्यार्थी किसी समस्या का समाधान परियोजना कार्य के माध्यम से स्वयं करते हैं। इससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, जिम्मेदारी तथा सहयोग की भावना विकसित होती है।

2. कहानी विधि

कहानी विधि के माध्यम से विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा सरल एवं रोचक रूप में प्रदान की जा सकती है। यह विधि विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए प्रभावी होती है।

3. खेल विधि

खेल विधि विद्यार्थियों में सहयोग, अनुशासन एवं सहभागिता की भावना विकसित करती है। खेल आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को आनंदपूर्वक सीखने का अवसर प्रदान करता है।

4. भ्रमण विधि

भ्रमण विधि में विद्यार्थियों को विभिन्न स्थानों पर ले जाकर प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया जाता है। इससे विद्यार्थियों में सामाजिकता एवं अनुशासन का विकास होता है।

5. सक्रिय अधिगम विधि

सक्रिय अधिगम में विद्यार्थी स्वयं गतिविधियों में भाग लेकर सीखता है। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, तार्किक चिंतन एवं रचनात्मकता का विकास होता है।

6. समूह शिक्षण विधि

समूह शिक्षण विधि में विद्यार्थियों को समूहों में विभाजित करके शिक्षण कार्य कराया जाता है। इससे सहयोग, नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है।

शिक्षक की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक को शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र माना गया है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का मार्गदर्शक, प्रेरक एवं चरित्र निर्माणकर्ता है।

शिक्षक को अपने व्यवहार एवं शिक्षण पद्धति के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करना चाहिए। आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग करके शिक्षक शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रुचिकर बना सकता है।

शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग, ईमानदारी, सहिष्णुता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करे।

मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान समय में समाज में बढ़ती हिंसा, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार तथा नैतिक पतन को देखते हुए मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास भी होना चाहिए। वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों में मानवीय संवेदनाओं, अनुशासन, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना अत्यंत आवश्यक है।

मूल्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को सही और गलत के बीच अंतर समझने की क्षमता प्रदान करती है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को जिम्मेदार, संवेदनशील, अनुशासित एवं आदर्श नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही यह उनमें सहयोग, ईमानदारी, करुणा, राष्ट्रप्रेम एवं मानवता जैसे गुणों का विकास करके समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध होती है।

सुझाव

- शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
- विद्यालयों में मूल्य आधारित गतिविधियाँ आयोजित की जाएँ।
- भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
- डिजिटल शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ।

- विद्यार्थियों को सामुदायिक सेवा एवं सामाजिक कार्यों से जोड़ा जाए।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, कौशल आधारित एवं मूल्यपरक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देती है तथा शिक्षा को अधिक व्यवहारिक एवं छात्र-केंद्रित बनाने का प्रयास करती है।

मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, सहयोग, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों को केवल योग्य ही नहीं, बल्कि एक आदर्श एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास करती है।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों द्वारा आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का प्रभावी प्रयोग करके मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए, ताकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण हो सके।

ग्रंथसूची

- भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
- शर्मा, आर. ए. (2018). शिक्षण विधियाँ एवं शिक्षण तकनीक. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- अग्रवाल, जे. सी. (2016). शिक्षा का दर्शन एवं समाजशास्त्र. नई दिल्ली: विकास प्रकाशन।
- पाण्डेय, रामशकल. (2015). शिक्षा में मूल्य एवं नैतिकता. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL